Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04, October-December, 2025, pp. 133-138

महाराजा अनूप सिंह और स्थापत्य कला

ज्योति मीणा*

विद्यार्थी, महारानी महाविद्यालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: pabrijyotimeena@gmail.com

Citation: *मीणा, ज्योति. (2025). महाराजा अनूप सिंह और स्थापत्य कला. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04), 133–138.*

सार

बीकानेर राज्य के इतिहास में महाराजा अनूप सिंह का नाम एक ऐसे शासक के रूप में लिया जाता है जिन्होंने न केवल युद्धक कौशल और राजनीतिक कुशलता का परिचय दिया, बल्कि कला, साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में भी अमिट छाप छोड़ी। सत्रहवीं शताब्दी का यह काल राजस्थान के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का समय था। इस अवधि में बीकानेर दरबार में स्थापत्य की एक विशिष्ट शैली का विकास हुआ जिसमें मुगल प्रभाव, राजस्थानी परम्परा और स्थानीय सौंदर्य बोध का अद्भुत संगम दिखाई देता है। महाराजा अनूप सिंह (1669 – 1698ई.) ने अपने शासनकाल में बीकानेर को एक सुदृढ़ प्रशासनिक, सांस्कृतिक और स्थापत्य दृष्टि से समृद्ध राज्य बनाया। उनके द्वारा निर्मित दुर्ग, महल, मन्दिर और शैक्षणिक संस्थान न केवल स्थापत्य काल के अनुपम उदाहरण हैं, बल्कि उस युग की बौद्धिक चेतना और सौंदर्यपरक दृष्टि के प्रतीक भी है। इस शोध लेख में महाराजा अनूप सिंह की स्थापत्य दृष्टि, उनके द्वारा कराए गए निर्माण कार्यों, उनके कलात्मक संरक्षण और बीकानेर की स्थापत्य परम्परा पर उनके प्रभाव का गहन विश्लेषण किया गया है।

शब्दकोशः *स्थापत्य कला, अनूप सिंह, महल वास्तु, भित्तिचित्र।*

प्रस्तावना

राजस्थान का इतिहास केवल युद्ध और राजनीति का इतिहास नहीं है, बल्कि यह कला, स्थापत्य, संगीत, साहित्य और संस्कृति की महान परम्परा का इतिहास भी है। बीकानेर, जो राव बीका द्वारा 15वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में स्थापित किया गया, शीघ्र ही मारवाड़ और मेवाड़ के समान एक प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र बन गया। यहाँ के शासकों ने न केवल अपनी सत्ता को सुदृढ़ किया, बल्कि कला और स्थापत्य के माध्यम से अपने राज्य की पहचान को भी अमर किया।

महाराजा अनूपसिंह, बीकानेर के उन शासकों में से थे जिन्होंने अपने पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाते हुए उसे एक नए आयाम तक पहुँचाया। उनका शासनकाल बीकानेर दरबार के लिए सांस्कृतिक स्वर्णयुग सिद्ध हुआ।

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

वे न केवल एक पराक्रमी सेनानायक थे जिन्होनें दक्षिण भारत और दक्कन अभियानों में अपनी वीरता का प्रदर्शन किया, बल्कि वे एक दूरदर्शी कला संरक्षक भी थे।

उनके काल में बीकानेर के राजमहल का विस्तार हुआ, अनुप महल का निर्माण हुआ, और दुर्गों, मंन्दिरों तथा भवनों में सुक्ष्म कलात्मक अभिव्यक्तियों का समावेश देखने को मिला। इस युग की चित्रकला और मूर्तिकला में जो परिष्कार दिखाई देता है, वह स्थापत्य में भी परिलक्षित होता है।

शोध समस्या

बीकानेर नगर राजस्थान की स्थापत्य परम्परा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है, जहाँ अनूप सिंह (1669 – 1698ई.) के शासनकाल में कला और स्थापत्य का विशिष्ट विकास हुआ। इस काल में निर्मित किले, महल, मन्दिर और हवेलियाँ न केवल स्थापत्य सौंदर्य का उदाहरण हैं, बल्कि बीकानेर की सामाजिक धार्मिक ओर सांस्कृतिक चेतना का भी दर्पण प्रस्तुत करती है। यद्यपि अनूप सिंह काल की स्थापत्यकला का ऐतिहासिक महत्व निर्विवाद है, फिर भी इस दिशा में गहन, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन का अभाव देखा जाता है। इस शोध का उद्देश्य अनूप सिंह काल में विकसित स्थापत्य शैली की विशिष्टताओं, निर्माण तकनीकों तथा कलात्मक प्रवृत्तियों का अध्ययन करना है। यह शोध बीकानेर की सांस्कृतिक धरोहर को नए दृष्टिकोण से समझने में सहायक होगा और राजस्थान की स्थापत्य परम्परा में अनूपसिंह की भूमिका को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

महाराजा अनूप सिंह का जन्म सन् 1638 ई. में हुआ था। वे बीकानेर के प्रसिद्ध शासक राजा कर्ण सिंह के पुत्र थे।

उनका शासनकाल 1669 ई. से 1698 ई. तक रहा। यह काल भारत के इतिहास में एक अत्यंत परिवर्तनशील समय था। मुगल सम्राट औरंगजेब का शासन, मराठों का उदय, और क्षैत्रीय राज्यों की शक्ति संतुलन की प्रक्रिया – इन सब ने राजपूताने की राजनीति को गहराई से प्रभावित किया।

अपूनसिंह ने मुगल दरबार में सेवा दी और कई अभियानों में भाग लिया। उनकी वीरता और निष्ठा के कारण उन्हें 'महाराजा' की उपाधि मिली। परन्तु बीकानेर, लौटने पर उन्होंने अपनी ऊर्जा राज्य के सांस्कृतिक और स्थापत्य विकास में लगाई।

उनकी स्थापत्य दृष्टि में दो प्रमुख तत्व दिखाई देते हैं – एक ओर मुगल शैली की संगठित योजना और सुक्ष्म सज्जा, दुसरी ओर राजस्थानी परम्परा की स्थानीय भव्यता और रंगीनता। अनूप सिंह ने इन दोनों को मिलाकर एक ऐसी स्थापत्य शैली का सृजन किया जो बीकानेर को अन्य राज्यों से भिन्न बनाती है।

अनुप महल गंगाशहर, अनुपगढ़ दुर्ग, तथा करणी माता मन्दिरों का पुनरूद्वार उनके शासनकाल में हुआ। साथ ही उन्होंने कई विद्वानों, शिल्पियों और वास्तुकारों को संरक्षण दिया। उनके शासन में स्थापत्य केवल सत्ता का प्रतीक नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक चेतना और धार्मिक सौन्दर्य का भी माध्यम था।

उनकी स्थापत्य दृष्टि में शिल्प, रंग, अनुपात और सौन्दर्य की एकता दिखाई देती है। बीकानेर के लाल बलुआ पत्थर से बने भवनों में नक्काशी की बारीकी, झरोखों की लयात्मकता अैर भीतरी हिस्सों की चित्र सज्जा – यह सब उनकी कलात्मक दृष्टि का प्रमाण है।

स्थापत्य दृष्टि

महाराजा अनूप सिंह का स्थापत्य दृष्टिकोण न केवल सौंदर्य बोध से प्रेरित था, बल्कि उसमें व्यावहारिकता, धार्मिकता और सांस्कृतिक चेतना का गहरा समावेश था। उन्होनें स्थापत्य को केवल भवन निर्माण की प्रक्रिया नहीं माना बल्कि उसे एक जीवन्त कला के रूप में देखा। उनका विश्वास था कि स्थापत्य किसी समाज की आत्मा का प्रतिबिम्ब होता है।

उनके निर्माण कार्यों में स्पष्ट रूप से तीन तत्व दिखाई देते हैं –

- धार्मिकता और प्रतीकवाद,
- सौन्दर्य और कलात्मक अभिव्यक्ति, तथा
- उपयोगिता अैर स्थायित्व।

उन्होंने भवनों के निर्माण में स्थानीय शिल्पियों की प्रतिभा को उभारने पर बल दिया। उनके शासनकाल में बीकानेर में स्थापत्य का केन्द्र 'अनूप महल परिसर' था।

इस महल का निर्माण न केवल राजसी निवास के रूप से किया गया, बल्कि यह कला, संगीत, साहित्य और धर्म का संगम स्थल भी था।

उनकी स्थापत्य दृष्टि पर मुगल दरबार के अनुभव का गहरा प्रभाव था। दिल्ली, आगरा और लाहौर की इमारतों में प्रयुक्त योजनाबद्धता, अनुपातबोध, मेहराबों और गुबंदों की संरचना – इन सबका प्रभाव बीकानेर के निर्माणों में प्रयुक्त योजनाबद्धता, अनुपातबोध, मेहराबों और गुम्बदों की संरचना – इन सबका प्रभाव बीकानेर के निर्माणों में दिखाई देता है। परन्तु उन्होंने इस मुगल प्रभाव को स्थानीय तत्वों के साथ मिलाकर एक स्वतंत्र शैली का विकास किया, जो ''बीकानेरी स्थापत्य'' के नाम से जानी जाती है।

अनूप सिंह की शैली में लाल बलुआ पत्थर, संगमरमर की सजावट दरवाजों पर पीतल की कारीगरी, और भीतरी दीवारों पर सोने के रंग से चित्रांकन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी स्थापत्य शैली में धार्मिकता और राजसी गरिमा दोनों का समन्वय दिखाई देता है।

बीकानेर का स्थापत्य विकास

बीकानेर की स्थापत्य विकास क्रमिक रूप से हुआ था। राव बीका द्वारा दुर्ग की नींव डाले जाने के बाद, उनके उत्तराधिकारियों ने धीरे – धीरे इस शहर को सुनियोजित राजधानी का रूप दिया। परन्तु वास्तविक स्थापत्य समृद्धि महाराजा कर्ण सिंह और महाराजा अनूप सिंह के काल में हुई।

अनूपसिंह ने अपने शासनकाल में बीकानेर को एक कलात्मक नगर के रूप में परिवर्तित कर दिया। उन्होनें पुराने दुर्गों और भवनो का विस्तार कराया, नए महलों का निर्माण करवाया और धार्मिक संस्थानों को पुनर्जीवित किया।

बीकानेर के स्थापत्य में इस समय जो परिवर्तन हुआ, वह तीन स्तरों पर देखा जा सकता है।

- **राजकीय स्थापत्य**

राजमहल दुर्ग, दरबार भवन, और प्रशासनिक इमारते इस वर्ग में आती हैं। इनमें लाल बलुआ पत्थर का उपयोग प्रमुख था। इन भवनों में बाहरी भव्यता के साथ भीतरी सज्जा का भी विशेष ध्यान रखा गया।

- **धार्मिक स्थापत्य**

अनूपसिंह ने कई मंदिरों का पुननिर्माण और विस्तार कराया। करणी माता मन्दिर, लक्ष्मीनाथ मन्दिर, और अनूपगिरी महंत परम्परा से जुड़ी हुई कई धार्मिक स्थापनाएँ इस काल में विकसित हुई।

- **लोक स्थापत्य**

नगर में सड़कों, चौकों, कुओं, बावड़ियों और धर्मशालाओं का निर्माण कराया गया। इन निर्माणों से बीकानेर का शहरी ढाँचा अधिक संगठित हुआ।

बीकानेर के स्थापत्य विकास की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यहाँ की हर इमारत स्थानीय परिवेश से जुड़ी हुई प्रतीत होती थी। जलवायु, धूप और धूल – इन सभी प्राकृतिक तत्वों को ध्यान में रखकर निर्माण किया जाता था।

अनूपसिंह ने शहरी नियोजन पर विशेष ध्यान दिया।

उन्होनें राजमहल परिसर, बाजारों, मन्दिरों और आवासीय क्षेत्रों को एक सुनियोजित रूप दिया। यह नियोजन का प्रारम्भिक रूप माना जा सकता है।

अनूप महल व अनूपगढ़ दुर्ग का विश्लेषण

- **अनूप महल**

अनूप महल बीकानेर दुर्ग के भीतर स्थित है और इसे महाराजा अनूप सिंह की स्थापत्य दृष्टि का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है। इसका निर्माण सन् 1674 – 1690 ई. के मध्य हुआ। इस महल की सबसे बड़ी विशेषता इसकी भित्ति सज्जा है।

भीतरी दीवारों पर सुनहरी पेंटिंग, पुष्प सज्जा, और जालीदार नक्काशी इसे अत्यंत आकर्षक बनाती है। यहाँ के कक्षों में भारतीय पौराणिक कथाओं, दरबारी जीवन, संगीत और नृत्य के दृश्य चित्रित है।

अनूपमहल के दरबार कक्ष में लकड़ी और संगमरमर का सुन्दर संयोजन देखने को मिलता है। छतों पर मीनाकारी और दर्पण कला का भी प्रयोग किया गया है। स्थापत्य की दृष्टि से यह भवन संतुलन, अनुपात और रेखाओं की एक अद्भुत लय प्रस्तुत करता है।

- **अनूपगढ़ दुर्ग**

बीकानेर से लगभग 130 किलोमीटर दूर स्थित अनूपगढ़ दुर्ग का निर्माण भी महाराजा अनूपसिंह ने कराया था। इसका उद्देश्य केवल सुरक्षा नहीं था, बल्कि यह क्षैत्रीय प्रशासनिक केन्द्र और सैन्य चौकी के रूप में भी प्रयुक्त होता था।

दुर्ग का विन्यास वर्गाकार है जिसमें चारों दिशाओं में प्राचीर और बुर्ज बने है। इनकी दीवारें मजबूत पत्थरों से बनी हैं और इनमें रक्षात्मक दृष्टि से तोरणद्वार, निगरानी कक्ष और हथियार रखने के स्थान निर्मित किए गए हैं।

अनूपगढ़ दुर्ग की स्थापत्य योजना में एक ओर पारम्परिक राजपूत शैली की झलक है तो दुसरी ओर मुगल स्थापत्य की अनुशासित समरूपता भी दिखाई देती है।

अनूपगढ़ दुर्ग की दीवारों पर जो बारीक नक्काशी और चित्रांकन है, वह यह दर्शाता है कि स्थापत्य केवल रक्षा का साधन नहीं बल्कि सौंदर्य और कला की साधना का भी प्रतीक था।

- **कला, शिल्प व चित्रांकन**

महाराजा अनूप सिंह का काल केवल स्थापत्य निर्माण का युग नही था, बल्कि यह बीकानेर की चित्रकला, मूर्तिकला और शिल्पकला के उत्कर्ष का काल भी था। स्थापत्य के साथ – साथ भित्तिचित्रों, मीनाकारी, दर्पण कार्य, और लकड़ी की नक्काशी जैसी कलाएँ नई ऊँचाइयों पर पहुँची।

बीकानेर की चित्रकला पर मुगल दरबार की सूक्ष्मता और राजस्थानी रंगबोध का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। अनूप सिंह ने चित्रकारों और शिल्पकरों को संरक्षण दिया जिसके परिणामस्वरूप दरबार की दीवारें, झरोखें, छतें और दक्ष कलात्मक रूप से सजने लगे।

अनूपसिंह की दीवारों पर जो चित्र हैं, वे केवल सजावट इनमें राजदरबार, नृत्य, संगीत, धार्मिक दृश्य और पौराणिक आख्यानों का अत्यंत सुन्दर चित्रण है। स्वर्णाभ रंग का प्रयोग इसे विशिष्ट बनाता है।

उनके काल की शिल्पकला में जालीदार खिड़कियाँ, पुष्प लताओं की आकृतियाँ, और ज्यामितीय संतुलन प्रमुख है। बीकानेर की स्थापत्य कला का यह विशेष गुण है कि यहाँ सौंदर्य और उपयोगिता का संतुलन कभी नहीं टूटा। वास्तु और शिल्प का यह समन्वय ''अनूप शैली'' कहलाता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है –

- रूप और रचना में संतुलन
- सज्जा और कार्य में समरसता
- स्थानीय शिल्प परम्परा का जीवन्त प्रयोग।

सांस्कृतिक प्रभाव

महाराजा अनूप सिंह का प्रभाव बीकानेर की सांस्कृतिक चेतना पर दीर्घकालिक रहा। स्थाापत्य के माध्यम से उन्होनें न केवल सौंदर्य का विस्तार किया, बल्कि धार्मिकता और बौद्धिकता की भावना को भी बढ़ावा दिया। उनकी नीति ''धर्म, शौर्य और कला'' पर आधारित थी।

उन्होनें दरबार में विद्धानों को स्थान दिया – संस्कृत, फारसी और राजस्थानी भाषा के अनेक ग्रन्थों का अनुवाद हुआ। बीकानेर दरबार में धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण था, जो स्थापत्य में भी परिलक्षित होता है।

अनूप सिंह के महल की भीतरी सज्जा में हिन्दू प्रतीकों के साथ फारसी सौन्दर्य शास्त्र का मिश्रण मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अनूपसिंह का दृष्टिकोण व्यापक और समन्वयकारी था।

उनके द्वारा स्थापित स्थापत्य परम्परा ने बीकानेर को राजस्थान का एक सांस्कृतिक केन्द्र बना दिया। उनके उत्तराधिकारी महाराजा सूरसिंह, गजसिंह आदि ने भी इस परम्परा को आगे बढ़ाया। आज भी बीकानेर का स्थापत्य उसी युग की स्मृतियों को जीवित रखे हुए है।

महाराजा अनूप सिंह के काल में स्थापत्य ने जो स्वरूप ग्रहण किया, वह न केवल उस युग की कलात्मक चेतना को प्रकट करता है बल्कि राजस्थान की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी बन गया।

निष्कर्ष

महाराजा अनूप सिंह के काल का स्थापत्य बीकानेर राज्य की आत्मा के समान है। उन्होनें स्थापत्य को केवल राजकीय प्रदर्शन का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे संस्कृति, धर्म और जीवनदृष्टि का प्रतिबिम्ब बनाया।

उनके द्वारा निर्मित भवन, महल, दुर्ग, मन्दिर और नगर नियोजन आज भी उनकी दुरदृष्टि का प्रमाण है। स्थापत्य में उन्होनें भारतीय परम्परा की जड़ों को संजोते हुए नवीनता का समावेश किया।

बीकानेर का स्थापत्य, अनूपसिंह के काल में, राजपूत और मुगल कला का संगम बन गया। यही कारण है कि उनके निर्माण आज भी अध्ययन, शोध और पर्यटन के केन्द्र है।

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि महाराजा अनूपसिंह केवल एक राजा नहीं थे, बल्कि, एक दार्शनिक कलाकर थे जिनकी दृष्टि में स्थापत्य ''संस्कृति की भाषा'' था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्राथमिक स्त्रोत

1. बीकानेर राज्य के राजकीय अभिलेखाकार स्थापत्य निर्माण से सम्बन्धित पत्रावली व दफ्तरी लेख।
2. महाराजाा करण सिंह और अनूपसिंह कालीन फरमान, आदेश एवं शिलालेख।
3. बीकानेर दुर्ग एवं अनूपगढ दुर्ग के प्रत्यक्ष सर्वेक्षण से प्राप्त स्थापत्य विवरण।
4. जूनागढ़ किला संग्रहालय, बीकानेर, चित्रों के मौलिक अभिलेख और स्थापत्य नमूने।
5. राजस्थानी हस्तलिखित पांडुलिपियाँ (राजस्थान ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, जोधपुर)
6. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की रिपोर्ट :– BHANDARKAR D.R. (1911) Report on the archaeological servey of northern circle

द्वितीयक स्त्रोत

7. सिंह, करण बीकानेर का इतिहास जयपुर विश्वविद्यालय प्रकाशन 1968।
8. शर्मा, वासुदेव राजस्थान की स्थापत्य कला, दिल्ली भारतीय विद्या भवन, 1972
9. जोशी, लक्ष्मण राजपूत स्थापत्य की परम्परा, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर 1985
10. शोखावत, भंवरलाल बीकानेर का सांस्कृतिक उत्कर्ष, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 1998
11. राजस्थानी अभिलेख संहिता, खंड IV , बीकानेर विभाग
12. आचार्य, हरिशचन्द्र मुगल – राजपूत स्थापत्य का तुलनात्मक अध्ययन, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली 2001।

❑❑❑